[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 4258 C आपका अनुक्रमांक.....

Unique Paper Code : 205339

Name of the Paper : Hindi Language – A

Name of the Course : B.A. (Prog.)
Modern Indian Language – Hindi A
आधुनिक भारतीय भाषा - हिंदी क

Semester : III

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित अनुच्छेद आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों से लिए गए हैं। किन्हीं **दो** अनुच्छेदों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (9+9=18)

(क) मुझे कदम-कदम पर

चौराहे मिलते है

बाहें फैलाए !!

एक पैर रखता हूँ

कि सौ रहे फूटती,

व मैं उन सब पर से गुजरना चाहता हूँ;

बहुत अच्छे लगते हैं;

उनके तजुर्बे और अपने सपने...

सब सच्चे लगते हैं;

अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,

मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ;

जाने क्या मिल जाए !!

(i) कवि को चौराहे बाहें फैलाए क्यों प्रतीत होते है ?

(ii) "एक पैर रखता हूँ..... गुजरना चाहता हूँ" - आशय स्पष्ट कीजिए।

(iii) तजुर्बे, अकुलाहट, राहें, -- का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए।

(ख) 'ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता; बल्कि शोषण होने लगता है। तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है। ऐसे बाजार मानवता के लिए विडम्बना है। और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है, वह अर्थ-शास्त्र सरासर औंधा है। वह मायावी (Capitalistic) शास्त्र है। वह अर्थ-शास्त्र अनीति-शास्त्र है।"

(i) लेखक यहाँ कैसे बाजार की आलोचना कर रहा है ?

(ii) ऐसे बाजार को लेखक मानवता के लिए विडम्बना क्यों मानता है ?

(iii) बाजार के सन्दर्भ में मायावी और अनीति-शास्त्र से क्या अभिप्राय है ?

(ग) जब सिंहासन के प्रश्न नहीं थे, तब ईद और ताजिए क्या हिन्दू भागीदारी के त्यौहार भी नहीं बनते जा रहे थे ? आजकल की तरह नेताओं और अग्रणी नागरिकों की दिखाऊ फोटो खिंचानेवाली भागीदारी नहीं, बल्कि रेवड़ीवालों और कारीगरों की ईमानदार भागीदारी। भारत की हिन्दू रिसासतों में जब सरकारी ताजिए बनाये और निकाले जाते थे, तब कोई राजा धर्म-निरपेक्षता या सर्वधर्म समभाव का नाम नहीं लेता था और न शायद तुष्टिकरण का कोई गणित उसके दिमाग में होता था। ताजिए निकलें और ईद मने, यह सब साँस लेने की तरह सहज बात थी और किसी को डर नहीं होता था कि ताजिया यदि किसी पीपल कि फुनगी से टकरा गया, तो दंगे न हो जाएँ। क्या उस सहजता की ओर लौटना अब संभव नहीं है ?

(i) आजकल के नेताओं की फोटो खिचाऊं भागीदारी पर टिप्पणी लिखिए।

(ii) 'सर्वधर्म समभाव' और 'तुष्टिकरण' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(iii) लेखक किस प्रकार की सहजता की ओर लौटना चाहता है ?

2. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (6×2=12)

(i) 'जीवन के अतिवाद' और 'मध्यपथ' से कवि का क्या अभिप्राय है ? (अरी वरुणा की शांत कछार)

(ii) 'पर्दा उठाओ ! पर्दा गिराओ' एकांकी का उद्देश्य लिखिए। ('पर्दा उठाओ ! पर्दा गिराओ')

(iii) नैसर्गिक भाषा और कृत्रिम भाषा में क्या अंतर है ? (सामान्य शब्द और पारिभाषिक शब्द)

(iv) 'अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा' को लेखक इलाहाबाद की खोज का प्रयास क्यों कहता है ? ('अब नहीं आती पुलिन पर प्रियतमा')

3. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (5×3=15)

(i) समाज के निर्माण में भाषा के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

(ii) 'भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है' - मत व्यक्त कीजिए।

(iii) भाषा परिवर्तन के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

(iv) भाषा की परिभाषा देते हुए उसके अभिलक्षणों पर विचार कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) भाषा और समाज के अंत:सम्बन्ध पर टिप्पणी लिखिए। (8)

अथवा

शिक्षित और अशिक्षित लोगों के भाषा प्रयोग पर मत व्यक्त कीजिए।

(ii) औपचारिक और अनौपचारिक भाषा प्रयोगों पर उदाहरण सहित विचार कीजिए। (7)

अथवा

भाषा समाज का आइना है - मत व्यक्त कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (5×3=15)

(i) कोई पांच तत्सम शब्द लिखकर उनके तदभव रूप भी लिखिए।

(ii) वाचक शब्द और वाच्यार्थ से आप क्या समझते है ?

(iii) निम्नलिखित के विपरीतार्थक शब्द लिखिए -

उन्नति, स्वार्थ, आदि, अमृत, गुण

(iv) निम्नलिखित के दो-दो समानार्थी शब्द लिखिए -

धरती, जल, बेटी, गरीब, पक्षी